परिशिष्ट 11 (शिष्यता)
शिष्यता के प्रशिक्षण में व्यवहारिक तरीकों के इस्तेमाल करने का लाभ

शिष्यता प्रशिक्षण कोर्स बहुत से व्यवहारिक तरीकों की शिक्षा देता है। उनके क्या उपयोग व अभिप्राय हैं?

1. आराधना करने का लाभ।

परमेश्वर को जानना ।

परमेश्वर की आराधना करने के लिए हमें सबसे पहले परमेश्वर को जानना जरूरी होता है। परमेश्वर के किसी विशेष गुण या विशेषता पर मनन करते या शिक्षा देते हुए हर बार जब आराधना करते हुए मिलते हैं,तो लोग परमेश्वर को और भी बेहतर तरीके से जान पाते हैं। जो लोग अलग पृष्ठभूमि या 'देवताओं' पर आस्था रखने वाले मतों से आते हैं, उन्हें ऐसे परमेश्वर के बारे में पता चलता है कि जिसने अपने आप को बाइबल और यीशु मसीह में होकर प्रगट किया है। परमेश्वर की कुछ विशेषताएं, परमेश्वर की पवित्रता, परमेश्वर की धार्मिकता, परमेश्वर का प्रेम, परमेश्वर की दया और परमेश्वर की विश्वासयोग्यता हैं।

आराधना करना सीखना

आराधना केवल गीत गाने से बढ़कर है। आराधना भय, प्रशंसा,अधीनता, और परमेश्वर के प्रति सर्मपण का भाव है, जो भिन्न प्रकार की प्रार्थनाओं और जीवन की विभिन्न शैलियों में प्रगट होता है।

–विषय वस्तु में विविधता।परमेश्वर की आराधना करने के द्वारा खास तौर पर ऊपर बताए गये परमेश्वर के गुणों के अनुसार आराधना करने से,हर एक आराधना सभा भिन्न, आर्कषक व शिक्षाप्रद बन जाती है।

–तरीकों में विविधताएं। प्रार्थना में की जाने वाली आराधना,शब्दों में,संगीत में,गीतों में,और शान्ति में हो सकती है। और जीवन में की जाने वाली आराधना का कारण पापों का दूर होना, आदतों का बदलना, आदर्श जीवन जीना, और परमेश्वर तथा मनुष्यों की सेवा करना हो सकता है।

2. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय में पसन्दीदा सिद्धान्त के तरीके का लाभ।

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताना(शान्त समय या भक्ति का समय) एक मसीही अनुशासन है,जिसका अभ्यास मसीह को अपने जीवन में लगातार और यदि सम्भव हो तो प्रतिदिन करना चाहिए।

परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय का पसन्दीदा सैद्धान्तिक तरीका एक मसीही को एक ही समय में बहुत से मसीही अनुशासन में प्रशिक्षित करता हैः प्रार्थना, वचन पढ़ना, चुनाव करना ,मनन करना, मध्यस्थता करना तथा दूसरों को सुसमाचार प्रचार करना।

कदम 1. प्रार्थना

आप परमेश्वर से मिलने के लिए अपने हृदय को तैयार करना सीखते हैं। परमेश्वर की उपस्थिति में प्रवेश करने के लिए आप अधिकाई से प्रार्थना करते हैं। आप चाहें तो इस प्रकार छोटी प्रार्थना कर सकते हैं," हे परमेश्वर मेरी आंखों को खोल ताकि मैं तेरी व्यवस्था की सुन्दर बातों को देख सकूं "(भजन 119:18)।

कदम 2.बाइबल से अनुच्छेद को पढ़ें।

आप अकेले बाइबल पढ़ना सीखते हैं। आप केवल एक शान्त स्थान में जाकर, अपने भीतरी विचारों पर ही मनन करके या किसी मानव रचित कविता पर ध्यान लगाकर परमेश्वर से मुलाकात नहीं कर पाते हैं। आपकी परमेश्वर से मुलाकात तब होती है जब आप परमेश्वर से उसके वचनों द्वारा बात करने के लिए कहते हैं। इसलिए आप बाइबल के खण्ड को पढ़े और अपेक्षा करें कि परमेश्वर बाइबल में लिखित वचनों के द्वारा आप से बात करेगें।

कदम 3. पसन्दीदा सिद्धान्त का चुनाव करें।

आप चुनाव करने के द्वारा अपने आप को सीमित करना सीखते हैं।

–उददेश्य। बाइबल अध्ययन का उद्देश्य बाइबल खण्ड को समझना तथा उससे प्राप्त शिक्षा को अपने जीवन में लागू करता है, तो परमेश्वर के साथ व्यतीत करने वाले व्यक्तिगत समय का उद्देश्य उस दिन के लिए परमेश्वर के साथ घनिष्ठ

सम्बन्ध स्थापित करना है। इसलिए बाइबल के अनुच्छेद में सारे सत्यों या सिद्धान्तों पर ध्यान केन्द्रित करने की बजाय किसी एक सत्य पर ध्यान केन्द्रित करता अच्छा है ।

–सीमित करना। बाइबल अनुच्छेद में प्राप्त बहुत सी सच्चाईयों में से किसी एक सच्चाई का चुनाव करने के लिए अपनी इच्छाओं को आत्मिक मुद्दों तक सीमित जुड़ा रखने का प्रयास करें। इसे आपको उन बातों पर ध्यान लगाने में सहायता मिलती है जो वास्तव में महत्वपूर्ण है, और आपका ध्यान आपकी पसन्द की बातों में या उन बातों की ओर भटकने से बच जाता है जो अपने आप को आपके सामने अत्यावश्यक प्रस्तुत करती हैं। इससे आपको 15 मिनट के भीतर ही परमेश्वर के साथ पर्याप्त समय बिताने में सहायता मिलती है। गहन बाइबल अध्ययन में इससे कहीं ज़्यादा समय लगता है।

कदम 4. अपने पसन्दीदा सत्य पर मनन करें।

आप बाइबल की सच्चाईयों पर मनन करना सीखते हैं।

–उद्देश्य। बाइबल के अनुच्छेद को पढ़ने तथा उस पर मनन करने में काफी बड़ा अन्तर है। बाइबल पढ़ने का उददेश्य बाइबल की अधिक जानकारी हासिल करना व उसके भली प्रकार से बाइबल के परिदृश्य को देखना होता है। बाइबल अनुच्छेद पर मनन करने का उद्देश्य उस अनुच्छेद के गूढ़ प्रकाशन को प्राप्त करना तथा यह पता करता है कि परमेश्वर आपसे उस प्रकाशन के द्वारा अपने जीवन में क्या काम करने की अपेक्षा करते हैं।

–तरीका। मसीही मनन के अर्न्तगत आपकी पसन्दीदा सच्चाई में शब्दों के अर्थ के बारे में विचार करना, प्रार्थना के द्वारा यह जानना कि परमेश्वर आपसे क्या कहना चाहते हैं और उस सच्चाई को अपने जीवन से जोड़कर देखना शामिल होता है। अपनी कौपी में लिखने के द्वारा एक निष्कर्ष तक पहुँचें।

कदम 5. अपने पसन्दीदा सत्य के लिए प्रार्थना करें।

जब परमेश्वर आपसे बात चीत करते हैं तो आप परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं। आप प्रार्थना करना सीखते हैं।

–बाइबल में लिखित बातों में परमेश्वर द्वारा बोली गयी बातों को जानने से आपको प्रार्थना के विषयों को जानने में सहायता मिलती है।
–आपकी प्रार्थनाएं परमेश्वर के साथ बातचीत बन जाती है– आप केवल उन बातों का ही जवाब देते हैं जो बातें परमेश्वर ने बाइबल के द्वारा आपसे कही हैं।
–आप केवल अपने लिए ही नहीं, वरन दूसरों के लिए,परिवार के सदस्यों, आपके नज़दीक व दूर रहने वाले लोगों के लिए भी प्रार्थना करते हैं।

3. परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय व्यतीत(शान्त समय) करने का लाभ।

यदि आप में से दो लोग या छोटा समूह एक समान बाइबल अनुच्छेद को सप्ताह में प्रतिदिन पढ़ते और फिर सप्ताह में एक बार उसके बारे में समझाते हैं तो आप इस प्रकार प्रतिदिन एक दूसरे की बढ़ने के लिए प्रोत्साहित कर रहे हैं। छोटे समूह में हर सप्ताह अपने विचारों को व्यक्त करने से हर एक जन को लगातार परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने में सहायता मिलती है।

अपने छोटे समूह में परमेश्वर के साथ पिछले सप्ताह व्यक्तिगत समय के दौरान सीखी गयी बातों को साझा करने के द्वारा असल में आप एक दूसरे प्रेम के रिश्ते व कामों में बढ़ने की प्रेरणा दे रहे हैं (इब्रानियों 10:24–25)।

अपने छोटे समूह में परमेश्वर के साथ पिछले सप्ताह व्यक्तिगत समय के दौरान सीखी गयी बातों को साझा करने के द्वारा असल मे आप एक दूसरे को सिखा रहे हैं(कुलुस्सियों 3:16)। क्योंकि पवित्र आत्मा हर मसीही में वास करता है, वह छोटे समूह के प्रत्येक सदस्य को शिक्षक या समूह का अगुवा बनने की शिक्षा देता है।

4. पाँच कदमों के बाइबल अध्ययन के तरीके का लाभ।

पाँच कदमों वाले बाइबल अध्ययन के तरीके का उद्देश्य छोटे समूह के सारे सदस्यों को सक्रीय रूप से बाइबल अध्ययन के 5 भागों में शामिल करना है। नहीं तो समूह के अगुवे के लिए बाइबल अध्ययन को बाइबल शिक्षा में परिवर्तित करना और कुछ ही बोलने वाले लोगों का पूरे बाइबल अध्ययन पर कब्ज़ा करना बहुत आसान हो जाता है।

कदम1. पढ़ना

आप एक साथ मिलकर बाइबल पढ़ना सीखते हैं।
समूह के एक सदस्य द्वारा बाइबल पढ़ने की बजाय,समूह के सभी सदस्यों को बाइबल अनुच्छेद में बारी बारी एक या दो वचन पढ़ने का अवसर मिलता है। प्रारम्भ से ही समूह का प्रत्येक सदस्य बाइबल अध्ययन में शामिल हो जाता है।

–बाइबल पढ़ने का उददेश्य जानकारी हासिल करना तथा बाइबल खण्ड का अच्छा परिदृश्य प्राप्त करना होता है। लेकिन बालबल अध्ययन का उद्देश्य बाइबल अनुच्छेद में प्राप्त सारी सच्चाईयों को समझना और उन्हें सम्भवतः इस्तेमाल करना है।

कदम 2. खोज करना

आप बाइबल की उन बातों पर ध्यान केन्द्रित करना सीखते हैं जिन्हें आप समझ सकते हैं न कि उन बातों पर जो आपकी समझ से बाहर हैं। इससे पहले की आप बाइबल अनुच्छेद की सारी कठिन सच्चाईयों को समझने या सारे प्रश्नों के उत्तर देने की दलदल में धँसने लगें, आपको सुझाव दिया जाता है कि आप उन बातों पर ध्यान दें जो आपको आसानी से समझ आ रही हैं और जो बातें आपके मन और हृदय को छूती हैं। बाइबल अध्ययन का समय सकारात्मक आनन्ददायक सत्यों की खोज और सच्चाईयों के उत्तेजना पूर्ण इस्तेमाल से भरा होना चाहिए। यह समय समस्याओं, बिना उत्तर प्राप्त प्रश्नों, और कठिन बहस जैसे नकारात्मक तत्वों से भरा नहीं होना चाहिए। इसी कारण से सत्य की खोज को प्रश्नों से पहले रखा गया है।

कदम 3. प्रश्न करना

आप सही तरीके से बाइबल की व्याख्या करना सीख जाते हैं।

बाइबल में लिखित बातें किसी मनुष्य के नहीं परन्तु परमेश्वर के विचार हैं(यशायाह 55:8–9)। बाइबल में बहुत सी बातें हैं जिन्हें समझना मुश्किल है(2 पतरस 3:16)। इसलिए परमेश्वर के लिए आपको वे सारी बातों को समझाना जरूरी हैं जिन्हें उसने बाइबल में रखने की चाह की थी।

– जिस प्रकार से यातायात सम्बन्धी नियम होते हैं जिससे दुर्घटनाएं न हों, वैसे ही बाइबल की व्याख्या करने के अपने नियम होते हैं, जिससे आप बिना कोई गलती करे बाइबल को समझ सकते हैं। मैनुएल 3, अध्याय 29 " बाइबल की उचित व्याख्या को देखें। बाइबल अपने आप में ही बाइबल का उत्तम टीका है। हमेशा बाइबल अनुच्छेद की व्याख्या सम्पूर्ण बाइबल के प्रकाशन में होकर करें। सदैव पुराने नियम की व्याख्या नये नियम के प्रकाशन में होकर करें। समूह का अगुवा आपके द्वारा पूछे गये प्रश्न का समाधान करने के लिए बाइबल के दूसरे अनुच्छेद को पढ़ने का सुझाव दे।

–समूह के अगुवे को प्रश्न नहीं पूछना चाहिए। उसे समूह के प्रत्येक सदस्य को कम से कम एक ऐसे प्रश्न को पूछने का अवसर प्रदान करना चाहिए जो वह समूह के साथ चर्चा करना चाहता है। इस तरह समूह के सारे महत्वपूर्ण प्रश्नों का हल मिल जाएगा। और प्रश्न भी न्यायोच्चित प्रश्न होने चाहिए।

कदम 4.लागू करना

आप बाइबल की शिक्षाओं को अभ्यास करना सीखते हैं(मत्ती 7:24–27)।

–इससे पहले कि वे अपने जीवन में बाइबल अनुच्छेद से प्राप्त सच्चाईयों या सिद्धान्तों को इस्तेमाल करना प्रारम्भ कर दें यह अच्छा होगा कि आप आपस में विचार विमर्श करने के बाद बाइबल से प्राप्त सच्चाईयों पर आधारित सम्भावित कामों की सूची बना लें।

– फिर आप में से प्रत्येक जन उसी सूची में लिखे हुए कामों में एक को लेकर अपने व्यक्तिगत जीवन में उसे लागू करने का प्रयास करें। आप परमेश्वर से पूछ सकते हैं कि वह आपको क्या विश्वास दिलाना,समझाना और करवाना चाहता है। आप स्वेच्छा से अपने व्यक्तिगत अनुभवों को समूह के साथ बांट सकते हैं लेकिन ऐसा करने के लिए आप पर कोई जोर नहीं डाला जाना चाहिए।

कदम 5.प्रार्थना

परमेश्वर के आप से बात करने पर आप परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं।

–बाइबल अनुच्छेद को इकट्ठा अध्ययन करने के बाद,समूह में बारी बारी करके बाइबल अनुच्छेद के माध्यम से परमेश्वर द्वारा की गयी बात का प्रतिउत्तर दें और प्रार्थना करते समय उन्हीं सच्चाईयों को दोहराएं।

–एक वार्तालात की तरह बाइबल अध्ययन और प्रार्थना दो पहलु हैं। पहले परमेश्वर बाइबल अध्ययन के द्वारा आपसे बातें करता है। फिर प्रार्थना के द्वारा आप परमेश्वर से बात करते हैं।

5. मनन तथा याद करने का लाभ।

आप दो मसीही सिद्धान्तों अर्थात मनन करना और याद करना सीखते हैं जो वचन पढ़ने और अध्ययन करने से बिल्कुल अलग हैं।

–आप बाइबल के अनुच्छेद को याद करने से पहले बाइबल अनुच्छेद में मतलब पर मनन करना सीखते हैं।

–आप परमेश्वर के वचनों में से कुछ को अपने मन व हृदय में बसाने का प्रयास करते हैं(भजन संहिता 119:9,11) ताकि जब कभी आप पाप के द्वारा किसी परीक्षा में पड़ें, जब कभी आप परमेश्वर की इच्छा के अनुसार प्रार्थना करना चाहते हों, जब कभी आप बाइबल में लिखित प्रतिज्ञाओं की उदघोषणा करना चाहें या जब कभी आप परमेश्वर के उत्तर में से लेकर लोगों के प्रश्नों का उत्तर देना चाहें या जब कभी आप परमेश्वर की सच्चाई से शिक्षा देना चाहें तो पवित्र आत्मा उन्हीं वचनों की आपको याद दिला सके।

–आप बाइबल की कुछ अति महत्वपूर्ण आयतों को याद करते हैं।

6.परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर में प्रार्थना करने का लाभ।

जब परमेश्वर आपसे बातचीत करते हैं तो आप भी परमेश्वर को प्रतिउत्तर देना सीखते हैं। आप सीखते हैं कि बाइबल पढ़ना व उस पर मनन करना दूसरी पुस्तकों को पढ़ने व उन पर मनन करने के समान नहीं होता। बाइबल पढ़ना, अध्ययन करना, मनन करना, और बाइबल के वचनों को याद करना परमेश्वर और आपके बीच बातचीत का केवल आधा हिस्सा है। परमेश्वर चाहते हैं कि आप उसकी हर बात का जवाब दें। अतः परमेश्वर के साथ व्यक्तिगत समय बिताने ,बाइबल पढ़ने व अध्ययन करने के बाद परमेश्वर के वचन के प्रतिउत्तर के रूप में प्रार्थना करना अति महत्वपूर्ण है।

7. घर में तैयारी करने का लाभ।

आप घर पर तैयारी करने के द्वारा शिष्य के रूप में अपने प्रशिक्षण प्राप्त करने के काम को लगातार बनाये रखते हैं। आप जब दूसरे मसीही मित्रों के साथ हों केवल तब ही आत्मिक अनुशासन का पालन न करें बल्कि जब आप अकेले या अपने गैर मसीही मित्रों के साथ हों तब भी अनुशासन बनाये रखें।